SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. – 1st year SESSION – 21-23

SUBJECT - C-02

TOPIC NAME – लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति

DATE - 21-01-22

युवा (यंग) बंगाल आंदोलन

PAGE NO.
DATE :

युवा बंगाल आंदोलन कट्टरपंथी बंगाली, बंगाली स्वतंत्र विचारकों का एक समूह था। हिन्दू कॉलेज के तेजतर्रार अध्यापक हेनरी लुइस डेरोजियो के नाम पर वे डेरोजियन के नाम से जाने जाते थे। युवा बंगाली हिन्दू समाज के स्वतंत्र विचारों की भावना व मौजूदा सामाजिक और धार्मिक संरचना के खिलाफ विद्रोह से प्रभावित व उत्साहित थे। 19 वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से ग्रस्त (आक्रांत) थी। उस समय शिक्षित भारतीय अंग्रेजी भाषा, पोशाक, साहित्य व पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान को श्रेष्ठ मानते थे। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रश्नचिन्ह लग गया था। 1813 ई० के पश्चात इसाई पादरियों का भारत में बड़े पैमाने पर आगमन हुआ। इन ईसाई धर्म प्रचारकों ने सामाजिक कुरीतियों को अपनाकर हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों ही धर्मों पर प्रहार करना प्रारम्भ किया जिसके परिणामस्वरूप असंख्य हिन्दुओं ने इसाई धर्म स्वीकार किया। धर्मांतरण के इस प्रवृत्ति पर अंकुश (रोक) लगाने के लिए अनेक हिन्दू व मुसलमान अग्रसर हुए। इनके प्रयासों से अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आंदोलन हुए। बंगाल के युवा वर्ग में 19 वीं० शताब्दी में नवीन वर्ग का अभ्युदय हुआ।

PAGE NO.
DATE :

इसी उग्रवादी प्रवृत्ति ने यंग बंगाल आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। इसका नेतृत्व एंग्लो इंडियन हेनरी विवियन डेरोजियो ने किया। ये पेशे से अध्यापक थे। उस समय डेरोजियन ब्रह्म समाज आंदोलन से आकर्षित थे। यंग बंगाल आंदोलन मूलतः हिन्दू बौद्धिक आंदोलन था। इसका प्रमुख केन्द्र हिन्दू कॉलेज था। यंग बंगाल आंदोलन में ईसाई शामिल थे। जैसे - एलेक्जेंडर डफ जिन्होंने जनरल एसेंबली इंस्टीट्यूशन का निर्माण किया। उनके विद्यार्थी लाल बिहारी डे ब्रजेन्द्रनाथ सील शामिल हुए, जो बाद में प्रमुख धर्मशास्त्री व ब्रह्म समाज का विचारक बनने चले गये।

देवबन्दी आ - ६

देवबन्दी आन्दोलन

PAGE NO.
DATE :

देवबन्दी आन्दोलन का नाम उत्तरप्रदेश के शहर देवबन्द के नाम पर पड़ा है। 1866 में दिल्ली के उत्तरप्रदेश के सहारनपुर शहर में प्रमुख विद्वान द्वारा एक इस्लामी सेमिनार देवबन्द स्थापित किया गया। इस संस्था के संस्थापक मुहम्मद कासिम थे।

एक मुसलमान उलमा (धर्मगुरु) जो प्राचीन विद्या के अनुयायी थे देवबन्द आन्दोलन चलाया इसके दो प्रमुख उद्देश्य थे —

(i) मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना

(ii) विदेशी शासकों के विरुद्ध जिहाद की भावना को बनाए रखना।

देवबन्द आन्दोलन ने सन् 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का स्वागत किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विद्रोह और उपनिवेशवाद के प्रतिरोध के लिए एवं अंग्रेजों द्वारा कब्जे का विरोध एवं इस्लाम के संरक्षण हेतु उलेमा देवबन्द पर एकत्र हुए और एक सुरक्षित ठिकाना बनाया।

इस्लामी धार्मिक स्कूल

आर्य समाज

PAGE NO.
DATE :

आर्य समाज की स्थापना गुजरात के काठियावाड़ के निवासी श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी वे एक अत्यन्त शक्तिशाली तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषणों के ही कारण आर्यसमाज का प्रभाव सर्वसाधारण पर हुआ सन् 1877 ई० में इन्होंने आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की इन्होंने हिन्दू धर्म को सब धर्मों से श्रेष्ठ कहा इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि मूर्ति पूजा जन्म पर आधारित जाति पाँति छुआ छूत सतीप्रथा इत्यादि का वेदों में कोई भी वर्णन नहीं है। इन्हें खत्म करने और विधवाओं को फिर से विवाह करने पर जोर दिया। इससे भी महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने यह किया कि वे भारत के निवासियों में आत्म सम्मान देश के प्रति प्रेम स्वतंत्रता और अपने पूर्वजों पर गौरव करने का भाव सभी में ला दिया यही भाव स्वतंत्रता आंदोलन के कारण हो गए।

इसके बाद 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी पुस्तक लिखकर उन्होंने अपने मूल विचारों को अभिव्यक्त किया। समानता एवं धार्मिक कट्टरता की भावना को लेकर आर्य समाज ने भारत में धार्मिक सामाजिक शैक्षिक और

राजनीतिक क्षेत्र में व्यापक कार्य किया इन्होंने वेदों की श्रेष्ठता को स्वीकारा और मन्त्र, पाठ, हवन, भजन कर्म आदि को बल दिया सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज ने बाल विवाह बहुविवाह पर्दाप्रथा, जातिप्रथा, सती प्रथा आदि कुरीतियों का विरोध किया शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने विभिन्न स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किये।

आर्य समाज के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही सर्वप्रथम स्वराज शब्द का प्रयोग किया तथा विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार एवं स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना सिखाया। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा कि "कोई कितना ही कहे परन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है।"

अलीगढ़ आंदोलन

PAGE NO.
DATE :

19 वीं शताब्दी के मुस्लिम धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों की कड़ी में अलीगढ़ आन्दोलन की एक अलग भूमिका है। सर सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ आन्दोलन की शुरूआत की अलीगढ़ आन्दोलन का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा विशेष तौर पर मुस्लिम समाज पर जिस प्रकार से हिन्दुओं के लिए राजा राममोहन राय ने जो कार्य किया वही कार्य सर सैयद अहमद खान ने भारतीय मुसलमानों के लिए किया था।

अलीगढ़ आन्दोलन ने मुस्लिम संप्रदाय की शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तथा उनके आधुनिकीकरण के लिए विविध कार्य किया। आन्दोलन का अर्थ आरम्भ में राजनीतिक था। 1886 में सर सैयद अहमद खाँ ने ऑल इण्डिया मोहम्मडन एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस की स्थापना अलीगढ़ आन्दोलन के शैक्षिक उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए की यह आन्दोलन उर्दू साहित्य की नवीन प्रवृत्ति का परिचय देता है इस आंदोलन के मुख्य दो लक्ष्य थे।

(1) अंग्रेज एवं मुसलमानों के बीच सम्बन्धों को ठीक करना
(2) मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार करना।

PAGE NO.
DATE :

सर सैयद अहमद खान
और उनके संगठन ने उर्दू साहित्य
के पुरानी लेखन पद्धति को त्याग
दिया और उन्होंने सरल पद्धति
को अपनाया जिसे मुसलमानों को
आन्दोलन के उद्देश्य को समझने
में मदद मिली।

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय

इस संस्था की स्थापना मौलाना मोहम्मद अली ने 1920 ई० में अलीगढ़ में की थी परन्तु प्रशासनिक दृष्टिकोण से सन् 1925 ई में यह संस्था दिल्ली में स्थानान्तरित कर दी गई यह एक पूर्णतया आत्म-निर्भर संस्था है जो सभी धर्म भाषा एवं सम्प्रदाय से संबंधित छात्रों के लिए है।

स्थापना के उद्देश्य

1. अपनी सांस्कृतिक परम्परा के ~~अनुसार~~ आधार पर नवयुवकों की शिक्षा व्यवस्था करना किन्तु दूसरी संस्कृतियों में भी जो सत्य और लाभदायक है उसे स्वीकार करना।

2. छात्रों के हृदय में सेवा सहनशीलता आत्म संयम और आत्मसम्मान के भाव समाहित करना।

3. छात्रों के विकासशील मन की बौद्धिक और भावात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

4. यह संस्था छात्रों में राष्ट्रीयता व आदर्श नागरिक बनने हेतु उच्च मूल्यों की शिक्षा प्रदान करती है।

PAGE NO.
DATE :

जामिया मिलिया इस्लामिया के विभाग

शिशु बालोद्यान व प्राथमिक शिक्षा विभाग	माध्यमिक शिक्षा विभाग	वि० वि० स्तर पर शिक्षा विभाग
• कार्यकाल – 6 वर्ष बेसिक शिक्षा – भारतीय कला / शिल्प • बाल प्रधान व क्रिया प्रधान शिक्षा व्यवस्था माध्यम – मातृभाषा	• कार्यकाल 6 वर्ष • बेसिक शिक्षा शिल्प प्रधान • व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास • डाल्टन योजना पद्धति द्वारा शिक्षा • विषय – मातृभाषा अंग्रेजी, भारतीय भाषा गणित, समाज कला जीवविज्ञान अर्थशास्त्र नागरिक शास्त्र	• अवधि - 2 वर्ष • विषय – इस्लामिक • विज्ञान सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी की शिक्षा

इसके अतिरिक्त आवासीय विभाग भी है

(1) आवासीय विश्वविद्यालय — इसमें कला वर्ग और सामाजिक विज्ञानों की शिक्षा का उच्चस्तरीय प्रबन्ध अरबी मदरसा के आलिम फाजिलों को देश भाषा और सामाजिक विज्ञानों के लिए विशेष प्रबन्ध इसमें एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग 25000 बहुमूल्य पुस्तकें है।

2 आवासीय हाईस्कूल — आधुनिक तकनीक से शिक्षा देने की व्यवस्था कला एवं उद्योग धंधों की शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है।

3 आवासीय प्राथमिक विद्यालय

इसमें प्रोजेक्ट विधि से शिक्षा दी जाती है। इस स्कूल में एक बाग एक बैंक तथा एक सरकारी दुकान है जिसका प्रबंध बच्चे स्वयं करते हैं।

छात्र संख्या

1937 में यहाँ भारत एवं एशिया के विभिन्न देशों के लगभग 400 छात्र इसमें अध्ययनरत थे।

आय के स्रोत

इसके पास अपना कोई स्थायी कोष नहीं है। भोपाल सरकार एवं दिल्ली म्यूनिसिपलिटी भी इसका आर्थिक सहायता करती है। इस संस्था के संस्थापक मौलाना मोहम्मद अली ने कहा था कि

"इस संस्था का सबसे बड़ा धन इसका उत्साह और बलिदान होगा और जनता को इसके प्रति सहानुभूति और स्नेह।"

तब से यह संस्था सतत प्रगति की ओर अग्रसर है।

इस प्रकार मुस्लिम सम्प्रदाय द्वारा संचालित राष्ट्रवादी संस्थाओं में जामिया मिलिया इस्लामिया एक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था है।

सत्यशोधक समाज

PAGE NO.
DATE :

प्राचीन काल से ही निम्न जातियों का शोषण होता रहा है और उनकी सामाजिक स्थिति दिन पर दिन दयनीय होती चली गई। जाति एवं धर्म के नाम पर उनका शोषण होता रहा उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत में 'पुनर्जागरण आन्दोलन' हुआ उस समय समाज सुधार की प्रक्रिया प्रारंभ हुई ये समाज सुधार आंदोलन धर्म एवं समाज सुधार से सम्बन्धित रहे। इन्होंने निम्न जातियों की सामाजिक आर्थिक स्थितियों सुधारने के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किया तब निम्न जातियों के कुछ जागरूक लोगों को ऐसा महसूस हुआ कि बिना स्वयं प्रयत्न किए जातियों का उद्धार संभव नहीं है। अतः निम्न जातियों के भारत के विभिन्न भागों में अनेक आन्दोलन हुए। ये लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे। निम्न जातियाँ इतनी उग्र हो गई कि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द कर दी। राजनीतिक अधिकारों की मांग करने लगी महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन में प्रमुख है — सत्यशोधक समाज और महार आन्दोलन।

यह आंदोलन ज्योतिबा फुले द्वारा 1870 ई० के दशक में अपनी पुस्तक गुलामगिरी

और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक एवं सत्यशोधक समाज द्वारा प्रारम्भ किया गया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य ब्राह्मणों के अत्याचारों से दलितों को रक्षा करना और दलितों को उनके अधिकारों को दिलाना था।

(i) जनता (मुख्यतः निम्न जातियां) में पुजारी वर्ग की स्वेच्छाचारिता के खिलाफ जागरूकता पैदा करना

(ii) दलितों के अधिकारों का दूसरा कार्य था आंदोलन का नेतृत्व करना इस आन्दोलन में शहरों के शिक्षित निम्न जातियों के लोग और गाँव की अद्भुत जनता दोनों ही सम्मिलित थी।

ज्योतिबा फूले ने 24 सितम्बर 1873 ई० को सत्यशोधक समाज की स्थापना की और निम्न जातियां अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी।